चन्द्रगुप्त मौर्य के महल की विशेषताएं

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS College Saharsa

चंद्रगुप्त मौर्य साम्राज्य का संस्थापक और एक महान शासक था| कौटिल्य की सहायता से उसने एक महान सम्राज्य और वंश की नींव रखी| अशोक महान उसी का उत्तराधिकारी था| हम इस लेख में चंद्रगुप्त के महल के स्थापत्य विशेषताओं के बारे में चर्चा करेंगें|

चन्द्रगुप्त मौर्य के राजप्रसाद से जोड़कर मुख्य परीक्षा के लिए कई प्रश्न बनाये जा सकते है, जैसे कि:

- मौर्य शासकों के नगर विन्यास और स्थापत्य कला का वर्णन करते हुए चन्द्रगुप्त मौर्य के राजप्रासाद का वर्णन करें|
- मौर्य काल में काष्ठ कला अपने विकास की पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी थी, मौर्य शासकों के राजप्रासाद का वर्णन करते हुए इस पर प्रकाश डालें|

ऐसे में चन्द्रगुप्त मौर्य का महल के बारे में ध्यान से पढ़ा जाना काफी आवश्यक है|

चन्द्रगुप्त मौर्य के राजप्रसाद की स्थापत्य कला विशेषताएं

कौटिल्य अपने अर्थशास्त्र में दुर्ग विधान के अंतर्गत वास्तुकला के जिन लक्षणों की चर्चा करता है, उसकी पुष्टि यूनानी और रोमन लेखकों के विवरण से भी होती है. इसके अनुसार मौर्यों के राजप्रासाद (चन्द्रगुप्त का महल) की निम्न विशेषताएँ रही है.

नगर के चारों और गहरी खाई थी और ऊंचे चबूतरे पर बना प्राकार था. इसमें यथा स्थान द्वार, कोष्ठ तथा बुर्ज बने हुए थे.

स्ट्रेबो पाटलिपुत्र का वर्णन करते हुए लिखता है कि यह गंगा और सोन के संगम पर स्थित था. यह समानांतर चतुर्भुज के आकार में 80 स्टेडिया *18 स्टेडिया में फैला था. इसके चारों ओर 700 फीट चौड़ी खाई थी.

नगर के चारों ओर लकड़ी की दीवारें बनाई गई थी, जिसमें बाण छोड़ने के लिए सुराखें बनाई गई थी. इसमें 64 द्वार तथा 570 बुर्ज थे. इसमें चंद्रगुप्त मौर्य का भव्य राज्य प्रसाद स्थित था.

राज प्रसाद एक विशाल भवन समूह था. इसमें अनेक बड़े बड़े कमरे थे. इनके चमकते स्तंभों में सोने की लता पत्रावली तथा चांदी की चिड़िया बनी हुई थी.

इनमें प्रमुख भवन अनेक स्तम्भों वाला मंडप था, जो लकड़ी के ऊंचे धरातल पर टिका हुआ था. यह राज प्रसाद एक बड़े पार्क के बीच स्थित था, जिसमें छायादार एवं हरे भरे वृक्ष लगे हुए थे. यहां अनेक सरोवर थी जिनमें विविध तरह की मछलियां पाली जाती थी.

पटना के समीप बुलंदीबाग तथा कुम्रहार में की गई खुदाई में लकड़ी के विशाल भवनों के अवशेष मिले हैं. बुलंदीबाग से नगर के परकोटे के अवशेष तथा कुम्रहार से राजप्रासाद के अवशेष प्राप्त हुए हैं.

बुलंदीबाग के नगर के परकोटे की लंबाई 450 फुट तक है, इसमें दोनों ओर लकड़ी के लठ्ठो की विशाल दीवारें हैं. प्रत्येक लट्ठा 19 फीट ऊंचा तथा 1 फुट चौड़ा है. लट्ठे की दोनों दीवारों को 14 फूट के बड़े लट्ठों से जोड़ा गया है. उनके बीचो-बीच कुटी हुई मिट्टी भरी गई है.

कुम्रहार के प्रासाद के अवशेष से पता चलता है कि यह एक भवन समूह था. एक भवन के अवशेष में पत्थर के विशाल स्तंभ खड़े हैं जो किसी विशाल स्तंभ मंडप की छत का आधार रहा होगा. शायद यह चंद्रगुप्त मौर्य का विशाल सभा भवन था. यह ऐतिहासिक काल का पहला विशाल अवशेष है जो एक मंडप के रूप में है. मंडप के मुख्य भाग में 10 स्तंभों की आठ कतारें पूर्व से पश्चिम की ओर बनी है.

मंडप के एक ओर काष्ठ मंच मिले हैं. इनके लट्ठों को एक दूसरे के ऊपर रखकर फलको द्वारा जोड़ा गया है. उनके किनारे आज भी नुकीले हैं तथा गांठ के जोड़ो की रेखा काफी अच्छी है. प्रत्येक मंच को विशिष्ट सूक्ष्मता और सुनिश्चित अनुपात में बनाया गया है. ये काष्ठ शिल्प का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं.

यह राजप्रासाद चौथी शताब्दी ई, में भी ज्यों का त्यों था. इसे देखकर प्रसिद्ध चीनी यात्री और लेखक फाह्यान को बड़ा आश्चर्य हुआ. उसका यह विश्वास था कि ऐसे अद्भुत महल मनुष्य द्वारा नहीं बनाए जा सकते, यह असुरों द्वारा बनाया गया होगा. इस प्रकार मौर्य युग में काष्ठ कला अपने विकास की पराकाष्ठा पड़ थी.

इलियन का मानना है कि पाटलिपुत्र के राजप्रासाद अर्थात महल की भव्यता की बराबरी सुसा तथा एकबतना कि राजप्रासाद भी नहीं कर सकते. कुछ विद्वान इसकी तुलना पर्सिपोलस से प्राप्त 100 स्तम्भों वाली हखमनी प्रासाद से करते हैं.